UNIVERSAL LIBRARY
OU_182550
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H82/R14J Accession No. G.H. 1708

Author राहुल [illegible]

Title जोंक / 1912

This book should be returned on or before the date last marked below.

जोंक

(नाटक)

राहुल बाबा

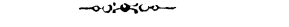

किताब-महल

इलाहाबाद

ई नाटक जूलाई ११,१२ तारीख (१९४२)के हजारीबाग जेहलमें लिखल गइल।

नाटकके खेलाड़ो

१—नोहर राउत	मुखिया खेलाड़ी
२—बुझावन महतो	किसान
३—सिरतन लाल	जिमदारके पटवारी
४—ढोंढामल	मिल-मालिक
५—भाकुरचंद	दूकानदार
६—लादूचंद	भाकुरकै बेटा
७—दुब्बर साहु	महाजन
८—रमजान	मजूर
९—गोपाल गिरि	संन्यासी साधू
१०—रामदास	वैरागी साधू
११—भगतिन	बिधवा बाभनी
१२—पंडित	पंडित
१३—मंसीजी	मुनीम
१४—रंगसिंह	जिमदार
१५—लोटन साहु	महाजन
१६—नोकर	नोकर
१७—अंग्रेज सिपाही	सिपाही
१८—खेलावन	सिपाही
१९—हिनुतानी	सिपाही

Checked 1988

जोंक

(गीत गावल जाति-आ)

हे फिकिरिया मरलस् जान।

सांझ बिहानकै खरची नइखे, मेहरी मारै तान॥
अन्न बिना मोर लइका रोवैं, का करिं हे भगवान्॥हे०॥
करजा काढ़ि काढ़ि खेती कइलीं, खेतवैं सूखल धान॥
बैल बेंचि जिमदरवा के देलीं, सहुआ कहै बेइमान॥

[बुझावन महतो एगो फाटल-महल धोती पहिरले खड़ा बाड़ें। एही घरी नोहर राउतकै आँखि बुझावन महतो की फिल्ली पर पड़ल, ऊ झट से फिल्ली से कौनो चीजु नोच के बुझावन से कहलैं]

नोहर—हई देखा बुझावन महतो!

बुझावन—(थथमिके) नोहर भाई! फेंक होने, फेंकबो करबा, हमरा पंजरा जनि लेआवा, का दु करिया-करिया हिल्लत-आ।

नोहर—तोहरे फिल्ली में से निकलनी हाँ, देख नु हई गोड़ लोहू-लोहान भइल बा। ना जानी केतना बेरिसे लागल रहल हा!

बुझावन—(खून से समुचा फिल्ली के भीजल देखि के) जोंक लागल

रहल हा, नोहर भाई ! हमार माथा घूमत-आ।
(बइठि गइलें)

नोहर—(बइठि के घाव के मुँह अँगुरी से दाब के) भइंसवा जोंक हा बुझावन ! आपन मतलब क चुकल बा। हो देखनु अउठा ऐसन मोट बा।

बुझावन—ओकरा ओर देखे के मन नइखे करत। पाव भर खून पियले होई नोहर भाई ?

नोहर—ना, पावभर ना, पाव भर बहुत होला, मुदा कनवा-छटांक से का कम होई। केतना त खून बहि गइल हा। तोहरा मालुम ना भइल ह बुझावन ?

बुझावन—जोंकि कै लागल नानु मालुम होखे। हम पोखरा में भइंसिया के धोवली हाँ, मिगडाह नु तपल बा, रोहिनी कै पानी बरिसि गइल बा, से पोखरवा में नयका पानी बहुत बा, नयका पनिया में ना जाने कहाँ से छैंटी के छैंटी जोंक उप्पर भइल बाडीसन् !

नोहर—तोहरा तनिको ना बुझाइल हा ?

बुझावन—ना नोहर भाई ! हम अपना भइंसिया के ढोंढी से चारिगो जोंक निकारि के बिगले रहली हँ, बाकी हमरा ई ना पता रहल है, कि हमरो जोंक लागल बा।

नोहर—अदिमी कै खून मिठ होला बुझावन, ऊ एक कनवा पी के मोटाइल बा। हम फेंकि देनी, देखा इतना पिअले बा, कि मुँह से खून निकरि रहल बा। मुदा

पाकी ना, लोग कहेला जोंकि के काटल घाव पाके ना।

बुझावन—साचे नोहर भाई! नाहीं त हमार भइंसिया त सरिके मुइ गइल रहित, रोजे ओकरा देहिं से चार गो पाँच गो बीगी ले। भगवान् एनी के काहे के बनौलैं?

नोहर—हमनी के देहिं में जम्मा-पूँजी नवै सेर खून बतावल जाला।

बुझावन—त एक्कै कनवा निकरला से कपार में घुमरी काहे आवैले नोहर भाई?

नोहर—घुमरियै के पूछत बाड़ा, बेसी खून गिरि गइला पर अदिमी मरि जाला। गोडकै मोटकी नस काटि दा, जे खून ना बन्न होई, त अदिमी मर जाई। दुइ मन के समुच्चा देहिं में उहै नौ सेर खून फइलल बा।

बुझावन—छोड़ दा नोहर भाई, अब बन्न हो गइल होई।

नोहर—[हाथ हटा के] हाँ खून बन्न हो गइल।

बुझावन—[उठिके जोंक पर हुमचि-हुमचि के पाँच-छ ऐड़ी मारके] नोहर भाई! देखा केतना खून बहत आ, इ जोंकिया सुटुकि के पातर हो गइल, बाकी मूअल ना।

नोहर—जोंकि के जिउ बड़ा कठकरेजी होला, बुझावन! ऊ जलदीना नु मूवै।

बुझावन—हाँ, नोहर भाई! लोग त कहेला कि सुखा के पीस

के फेंक दीहल जाय, तबहूँ बरखाकै पानी बरसतें जोंक फेनु जी जाले।

नोहर—ई हमरा नइखें मालुम, बाकी जोंकि बड़ कठकरेजी होले, ई देखतै बाड़ा।

[गाँव के पटवारी सिरतनलाल टोपी-मिरजई पहिरले, कान में कलम खोंसले अइलें।]

बुझावन—सलाम देवान जी, कहाँ घुमतानी।

सिरतन लाल—मालिक के दु मन घिउ, पाँच मन दही, दु गाड़ी कटहर केतना कुली अबगे विदा कइनी हाँ, तीन दिन से परसान-परसान रहनी हाँ, बुझावन महतो! आज इहै जाके साँस लेहनी हाँ।

बुझावन—देवान जी! ई पंच-पंच मन दही, दु-दु गाड़ी कटहर, एगो खस्सी हमहूँ देहनी हाँ, फेनु सुनतानी गाँवसे बारह गो खस्सी अउर गइल हा, मालिक के छगो परानी ई कुलि ले के का करिहैं?

सिरतन—तुहूँ नोनिये भुचेंग रहि गइला! बड़का लोग के अपनै देह ले नानु होखे। एक आदिमी के पाछे पचास गो जियैला; तौनो में ई त बबुई जी कै वियाह के सरजाम नु हवे?

बुझावन—एगो बरात कै सरजाम त हमरै गाँव से गइल हा, फेनु हमनी के मालिक के छप्पन गो मौजा बाटे, ई कुल्ह रखहू के जगह त ना होई?

सिरतन—राखै के कौन बात लेले बाड़ा, देखले नइख, भंडारघर केतना बड़ बा ? भंडारी के हाथ में चाभी कै झब्बा नइख देखले ? फेनु सरकार संतोखी साह के गोला खाली करा देले बाड़ें।

नोहर—हाँ, जब गाँव भरके घर खाली करा दीहल जाय, त छप्पन मौजा का छसै मौजा कै चीज-बतुस राखल जा सकैला।

सिरतन—बुझावन महतो ! अबकी चला नु तुहीं, का केहू सवांग के भेजवा मरदे ! उहां दुसै ले त नोनियै जुटिहें।

नोहर—भुंइहार बाबू के घरे बरात आई; औ ई दु सै नोनिया जुटिके का करिहैं ?

सिरतन—फरुहा-कुदारके बहुत काम रहैला नोहर ! बबुआजी कै बियाह भइल रहल, त गइल न रहला ?

नोहर—ना देवान जी ! सुनी ले खाये बिना गति बनि जाले, एही से ना जाईं।

सिरतन—खाये कै तकलीफ न होले, हमरा त नइखे भइल।

बुझावन—अपने के का होई, अपने के त बहनोईये बाड़ें दरबार में···। बाकी देवान जी ! एकओरसे लूट लागल बा। अदिमी बर-बेगारी में अपना कपारे चीज-बतुस लादिके दस कोस पहुँचावे जाला। मर-मजूरी त का मिली, अपना घर से सतुआ

बन्हि के जाईले. इहो ना होला, कि हमनी के जुरतै छुट्टी मिल जाओ; चारि दिन चिट्ठियै पुरुजा देवे में लगा देलें।

सिरतन—एमें सरकारकै कौनो दोस नइखें बुझावन महतो! दरबार में अइसहीं चलेला। एगो सरकार के पाछे हजार गो अदिमी जीयेलें। बड़का कै इहे नु ह?

नोहर—आठ आना रुपया महीना जब तनखाह दिआई, त अदिमी का करी देवान जी! ई त मालिक के नु सोचे के चाही कि रुपया-आठि आना महिन्ना में न हरवाहो-चरवाह आजकाल का दिन में ना मिली।

बुझावन—तीन ढेबुआ सेर त मंडुआ बा नोहर भाई! औ ढेबुआ सेर महुआ।

नोहर—मंडुओ-महुआसे गुजारा करे त खाली खोराकी में एक अदिमी का डेढ़ रुपया महिन्ना लग जाई, आपन कपड़ा-लत्ता आ मेहरारू-लइका कै पोसेकै त बातै फरका? मालिक ई नइखें देखत?

सिरतन—सनातन से दरबार में जेकर जेतना नोकरी लाग गइल बा, उहै चल जाति-आ। देखत नइखै, हमार तनखाह पचीस रुपया साल हवे, दु रुपया कै महिन्ना।

नोहर—मुदा देवान जी! अपने महरौली के बारह टोला कै राजा बनके बैठल बानी। छ हजार के तहसील में रुपया पीछे दु पैसा केतना होला?

बुझावन--औ खाये-पीये में एको पैसा खरच ना होखे के, घरभर कै काम एही से चलैला।

सिरतन—अब का अमदनी बा बुझावन महतो! हमरा बाबूजी के बखत देखता, एही महरौली में सोना बरसत रहल हा।

नोहर--महरौली में सोना अबहियों बरसत-आ देवान जी! बाकी हमनी खातिर ना पाँच हजार के तहसील अब छ हजार हो गइल। दु-दु पुहुत के जोतल खेत मालिक निकाल के जिरात बना लेहलें, दुसै बिगहा जिरात कबहीं रहलह देवान जी! ई हमनी का मुँहे जाब लगावल हा नू?

बुझावन—आ, सुनतानी मोटरवाला हर आवत-आ, जौनो गाँव कै चमार हरवाहा क के दु महिन्ना जीअत रहले हाँ, उहो बन्न भइल, ओकनी के मुँह के अन्न छूटल।

सिरतन—बकासकै झगड़ा जिला-जवार में ना उठल होइत, त ना नु निकलते? सरकार के एमे कौनो खसूर नइखे।

नोहर—ए देवान जी! देखत-देखत आँख पाक गइल। जान पड़त-आ कि महरौलीमें जेकर जनम-करम बा, जेकरा हजार पुहुत कै हाड़ इहाँ गलि गइल, से किछुओ ना। औ दस कोस लमहरा ई अमहरा कै बाबू साहेबै महरौली कै सब कुछ बाड़ें।

सिरतन—नोहर राउत! तोहार सिकाइत कै बेर हमरा

कचहरी में चहुंपल ह, मोहित राउत कै खियाल आवत-आ नाहीं त जानत नु बाड़ा जिमदारी फन्ना।

नोहर—देवान जी! बाबू कै खियाल मति करीं, जिनगी भर एगो भइंसिके उठौना, बेपैसाके लगौले रहलें, आ, ओही से नु अपने कै छोह बनल रहल हा।

सिरतन—मालिक की जमीन में बसल बाड़ा, उनकरा निगाह से जीयत-खात बड़ा, सेंतिहे नानु दही-दूध देला?

नोहर—ए देवान जी! बघउछ बाबाकै चौरा अवहिन लैं हमरा इहाँ हर साले पुजाला। महरौली कुल्ह जंगल रहै, जब हमनीके पुरुखा अइलें। हमार, बुझावन आ अउर लोगके पुरुखा जंगल काटके खेत-बारी बनौलें; बघउछ बाबा लेखाँ कतना लोगके बाघ मुअवलस् घरके केतना बच्चनके हुँडार उठा ले गइल।

बुझावन—हुंडरहो त हाँ खनी हमरा दादाके होस तक होत रहल हा, नोहर भाई।

नोहर—आ खेत बनावै में केतना आदमी साँप के कटलासे मु गइलें, तब महरौली गाँव बसल, तब महरौलीमें सोना बरिसे लागल, तब ओही सोनाके लूटे खातिर अमहराके बाबू चहुँपले। अमहराके बाबूकै एको बुन्न पसीना नइखे चूअल महरौली में।

सिरतन—बिधि-बरम्हा के रेख पर मेख मारल तोहरा हाथमें

नइखे नोहर ! तोहार अमहराके गढ़में नइखे न जनम भइल, नाहीं त तुहूँ दु लाख के तसील पर बइठता, मजिहटर साहेब तोहरौकै खुरसी दीतें। आपन हसियत देखा !

नोहर—ए देवान जी ! इ हमरा कहलाकै जबाब ना भइल। हमनीके जनम महरौलीमें भइल बा। हम त इहै जानी ले कि मतारी के थन में दूध पहिले आवेला, तब लइका जनम लेला। हमनीके जनम जब महरौली भइल बा, त महरौली हमनियेके जीये-खाये खातिर हवे।

सिरतन—जीअत-खात नइखे ? महरौलिये का परताप से, बाबुए साहेब का परताप से नु। जौना पतरीमें खायेके ओहीमें छेद ना करेके नोहर राउत !

नोहर—बाबू साहेबके पतरी होई, त अमहरा में होई, महरौली में ना देवान साहेब। महरौली ओही कै हवे जेकर पुरुखा जंगल काटि के, बाघ-हुड़ार मारिके एके अबाद कइलें; महरौली में सोना बरसत-आ, ओही हाथनके परताप से, जौनन में दस-दस गो ठेला पड़ल बा।

सिरतन—तोहरा अकिल सोचेके होइ, तब नु ? मुदा 'अन्हरा के आगे रोवै आपन दीदा खोवे' अहिर के बुधियै केतना ?

नोहर—लूटै के बुधि नइखे, खून चूसे के बुधि नइखै; बाकी माटो कै सोना हइहे हथवा बनावेला देवानजी ! छ हजार मलगुजारी दा, तीन हजार बबुनी के बियाह में दा, दु हजार मोटर के चिट्ठा में दा, पानसै हाथी के चिट्ठा में दा, तीनसै घोड़ा के चिट्ठा में दा। साल भर बेगारी करत-करत मू-आ। हेइ मालिक कै सवारी आइल, हेई मनेजर साहेब के हुकुम आइल, हेई सजावल साहेब अइलें, हेइ पटवारी, हेई, सवार, हेई सिपाही-पियादा, हेई गोराइत-बराहिल। दुत् तोरी की ! कमाई हमनीके, ओ हरियरो ना होये पाई, जेही आवत-आ से ही कुपुटि के खा लेत-आ।

सिरतन—घास जेतने कटाले-नोचाले ओतनै फुनगी फेंकैले। नोहर ! तोहरा लोगन के एतना ना देवेके पड़ित, त इतना कमइबो ना करत-आ ?

नोहर—कमा-कमा के मुवही भर हमनी के काम ह। औ हमनी के कमाई में आगि लगावेवाला उहाँ अमहरा में केहू बैठल बा। बबुआ के बरात गइल रहल, त कै हजार अदिमी गइल रहले, पाँच हजार त अतिश-बाजी में उड़ावल गइल। बनारस, लखनऊ आ कलकत्ता तकके दस गो नामी-नामी तायफा गइल रहलीं, ई केकरा कमाईसे देवान जी ?

सिरतन—अपना भागसे नोहर राउत ! कमायेवाला कमाला, भागवाला खाला। "करम प्रधान विस्व करि

राखा। जे जस करैसे तस फल चाखा।" बाबू साहेब ओह जनम में करम कइले बाड़ें, "तप चुकि राज" भइल बा, तू ओह जनम के पापी हवा, उहे भोगत बाड़ा ? केहूका हिरिस कइलासे ना किछुओ होला।

नोहर—त हमनी जे ई घाम में खेत कोडत-जोतत मूईले, बरखा में दिन भर भीजीले; धान रोपीले, घाम सोहीले, जाड़ा-पाला में कठुआते खेत में सत्ती होई ले, ई करम किछुओ नइखे ?

बुझावन—हमरा सोझवा अदिमीके बुधिमें त इहे आवत आ, कि भगवान् जेकरा के जौना गाँवमें जनम दिहलें, भगवान की ओर से ऊ गाँव ओकरे लिखा गइल; बाकी कागज-पत्तर के बात, से भगवान की ओर से नइखे लिखा के आइल। महरौली के कचहरी से छपराके कचहरी ले क देखले नु बानी, कैसन कागजमें इमानदारी राखल जाले।

नोहर—बुझावन ! जे धरतीमाता के पाछे आपन खून-पसीना एक करेला, उहे इमनदारी के अन्न खाला, नाहीं त ई जिमदार बड़का जोंक हवें। बाप रे बाप ! हमनी के देहीमें रतिको रकत ना रहि गइल, हाड़ौ-चाम एक-जगहा राखल मुसुकिल बाटे, आ ओने गुलछर्रा उड़त-आ।

[परदा गिरि जात-आ।]

अंक २

हाइ हो देहियाँ लगली जोंक।
रात-दिना हम कमवा में खटली, कपरा लेहलीं ठोंक।
डेढ़ा सवाई सहुआ कइले, देलै करेजवा भोंक॥
खोलि दुकनिया सेठवा लूटै, दैवो कै नाहि रोक॥
मिलमें बइठि मजुरवा रोवै, भकसी देहले झोंक॥हाइ हो०॥

[सेठ भाकुरचंद दुकानदार, सेठ ढोंढामल मिल-मालिक, दुब्बर साहु महाजन, तीनों अदिमी एक से एक मोट, गोड़ छितरौले आवत बाड़ें दुब्बर साहु उदुकिके गिरि गइलैं, ढोंढा आ भाकुर निहुरही में ओनहीं के ऊपर गिरि पड़लें।]

दुब्बर साहु—बाप रे बाप! पिसा गइनीं, केहू उठावा हो।

ढोंढामल—जिउ गइल रे दादा! भकुरवा हमरौ के जंतले बा। अरे कौंनो बँचावा।

भाकुरचन्द—घ्-घ्-घ-र-वा क्-कै क्-कुली ब्-बे-क-तिया म्. मु ग्-गइ-लें क्-का!

ढोंढामल—पेट फाटत-आ रे भकुरवा! कहां से तोरा घरे अइनीं।

भाकुरचन्द—ह्-ह्-ह-मरा क्-क्-के म्-म्-म्···

दुब्बर साहु—हाइ मुअनीं, हाइ, हाइ...।

[तीनि गो नोकर आके पारी पारा तीनों जनेके उठा के खड़ा कइलें, फेनु मेंच पर खुरसीपर तीनों जने बइठलै।]

भाकुरचन्द [हँफत, हाथ से पंखा करत] द्-दु-ब्-ब् र स्-सा-हु। च्-च्-चो-ट्-टि?

दुब्बर साहु [सांस तर उप्पर होत] जिव बांच गइल भाकुरचंद—जी ! पहिले असगुन भइल ।

ढोंढामल—पैदल दुइयो डेग चलै लायक ना हवे । आ दुब्बर साहु ! नौंवाकै कौनो लेसो नानु तहरा में बा । मरदवा ! तनी खैका कम करे के चाही ।

दुब्बर साहु—रामदुहाई ढोंढा ! खोराक आधी क देहनीं, दूनों सांझ मिलाके खाली डेढ़ पाव घीउ लेतानी । सहुआइन फिक्कि के मारे झुराइल जात बाड़ीं ।

ढोंढामल—ऊ काहे ?

दुब्बर साहु—हमार देहियां किछुओ-बा ? कहत बाड़ीं तूं त सूखि के काँटा होत जात बाड़ा ।

ढोंढामल—कांटा ! समुच्चा कलकत्ता सहर में इहै हमनियें तीन गो त झुराके काँट भइल बानी ।

दुब्बर साहु—हेई मरदवा, भाकुर के मुंहसे त बकारो नइखै निकरत । आ हमरा देहियाँ पर इहै नु गिरलैं पहिले ।

[नोकर गिलास में सरबत लेके अइलें ।]

ढोंढामल—हमरा अगरवालन के जात में बरजित त बा, मुदा सुननी हां, कि बच्चा मुरगी कै सुरुवा पिअला से मोटाई कम होले, चार महिन्नासे पांच गो रोज लेतानी, आ कुछ फैदो मालुम होत-आ ।

दुब्बर साहु—(आंखि आ मुँह फारिके)—ढोंढामल जी ! सांचे

फैदा भइल हा ? देहियाके ओजनवा किछु, कमल ह ?

ढोंढामल—एक बेर तौलले रहनीं, त दु सेर कम भइल।

दुब्बर साहु—आ अब की बेर ?

ढोंढामल—दस सेर बढ़ली हाँ, मुदा देहियामें बड़ फुरती मालुम होल।

भाकुरचंद—फ्-फ्-फु-र-त्-त्-ती !

दुब्बर साहु—भोजन बढ़ला घटलासे किछुओ न होखे, असल चीजु फुरती हवे।

ढोंढामल—फुरती त मालुम होत-आ, हमरा घर भरकै लोग कहत-आ।

भाकुरचंद—ह-हम हु-हु-हू ख्-खा-येब,

दुब्बर साहु—त हमरो ई दवाई करैके बा।

[पाछे की ओर से अवाज अवाति-आ] "पूंजीसाही, नास हो"

ढोंढामल—सुनला ह दुब्बर साहु ?

भाकुरचंद—ह्-ह-हम हूँ स्-सुन लीं।

दुब्बर साहु—मजूर किसान राजवाला अइलें।

ढोंढामल—ई जिउना छड़िहें दुब्बर साहु ! सपनामें नीदि केतना बेर उचटि जाति आ।

दुब्बर साहु—बिदादसमी में देस गइल रहनी हाँ, गाँवनों में ई बेरामी फइल गइल बा। उहाँ "जिमदारसाही नास हो" कहे लैं, आ इहाँ "पूंजीसाही नास हो।"

ढोंढामल—तहरा छपरा जिल्लाले ई ललका झंडा चहुंप गइल बा ?

दुब्बर साहु—गांवन तक ले ढोंढामल ! हमरा एक जना पाहुन के थैली गिनके खरीदल जिमदारीमें सैकड़न बिगहा खेत छीन लेहलें ।

ढोंढामल—सरकार पुलिस मदत ना कइले ?

दुब्बर साहु—किसान एतना एकवट गइलें, कि ओकनी कै बाति माने के परल । बाकी उहाँ कै बाति छाँड़ी, हई बताईं, ई जे हमनी के उप्पर संकट आइल बा, एकरा बारे में का करैके चाहीं ? काल हमरो गद्दी के समने ललका झंडा घुमौलें, आ "सूद-खोर नास हो" चिल्लात रहलें ।

ढोंढामल—हम त समुझत रहनी, कि हमनीके चटकल-पटकल के मजुरवै बिगडल बाड़ें ।

भाकुरचंद—ह्-ह्-मरा द-द्-द दु ··(लतफत हो गइले, पूरा बात मुंह से न निकसल]

ढोंढामल—ई तहरा से बात न होई सेठ भाकुरचंद ! बोलावा अपना बेटा के ।

भाकुरचंद—[नोकर के]-ज् ज्-जा, ब्-ब्-ब्-ब्—

नोकर—बबुआ जी के बोला ले आई सेठ जीं !

भाकुरचंद—ह्-ह्-ह्-हां ।

[नोकर निकर गइल । बापे लेखा मोट-झोंट जवान लादूचंद के ले आइल]

लादूचंद—जै राम जी की चाचा ढोंढामल ! जै रामजी की

[खुरसीपर बइठि गइलन]

ढोंढामल—अब नोकरन के जाये देवैके चाही ।

लादूचद—जासन ! [सब नोकर चल गइलन]

दुब्बर साहु—खदुका, गाहक, मजूर सबके चोट हमनी के उप्पर बा लादूचंदजी ।

लादूचंद—से त देखतानी, साहुजी !

दुब्बर साहु—कलकत्ता सहर में छोट-बड़ जेतना सूद कै रोजगार करैवाला बाड़ें, सब के उप्पर संकट आइल बा। खदुका एक ओर से हमनीके डाकू कहत बाड़ें ।

लादूचंद—हमनियों घर कै लछिमी लगा के दुकान कइले बानी । एकम-टीकस दा, मकान के भाड़ा दा, रोसनी-पानीकै टीकस दा । टीकस भाडा के मारे तबाह-तबाह बानी—

एगो बुढ़िया भिखारिन [आ के]—सेठजी ! एगो ढेबुआ भिखमंगिनियो के मिले, दूध-पूत बनल रहै ।

लादूचंद—भाग इहाँसे, मुखुतके पैसा खायेके सिखले बाड़ीं ।

बुढ़िया—केहू नइखे सेठजी ! भरला पर ना, जरला पर माँगतानी । फुलल रह सेठजी ! एगो ढेबुआ ।

ढोंढामल—ई त मालुम होत-आ, कि किछु दिनमें कलकत्ता भिखमंगवनेंकै हो जाई। सबेरेसे साँझ तक, बड़चो··· जब देखा तब भिखमंगा घेर ले रहैलें ।

दुब्बर साहु—पुलुसका ध के ले जायेके चाही, एकनीके मारे भलमानुसके कतहूँ बइठलो मुसुकिल हो गइल बा।

बुढ़िया—सेठजी ! पुलुसियो ले जाइत हमनीके, त खइलासे निहिचिन्त त रहतीं, एगो पैसा सेठजी ! बाल-बच्चा जुड़ाइल रहैं।

लादूचंद—(एगो अधेला फेंकि के) जो भाग, फेनु एनोकी ओर देखलीं, त निम्मन ना होई।

ढोंढामल—दुब्बर साहु जे बात कहलें, उहै बात हमनी मिल-वाला लोगनौके बा। चट, पट, कपड़ा, कागज जेतना मिल, कारखाना बा; सब जगह मजूर एकवटके सभा करत बाड़ें; जबसे सुनलें हाँ, कि रूस मुलुकमें मजूरन-किसानकै राज बाटै, तब सो एकनीके मन अउर बढ़ गइल बा।

दुब्बर साहु - ठीक कहलीं हाँ, ई ललका झंडौ ओहींसे उप्पर भइल हा। हमनीके त ई सब डाकू बूझैलें।

ढोंढामल—रोजगारमें टोटा पर टोटा पड़ल जात-आ। चौथा साल चार लाखकै मुनाफा भइल रहल, परियार पाँच हजार मजूर बढ़ावेके पड़ल, परसाल दु हजार औरू बढ़ावैके पड़ल। एहिसाल फेनु हड़तालके तयारी करत बाड़ैं, बाहरकै न जानी कहाँकै लुहेंड़ा जुटिकै भड़कावत बाड़ैं, मजूर-सभा, ऊनियन-फूनियन का का बनावत बाड़ैं।

दुब्बर साहु—अपने के लोगनके त सेठ ढोंढामल ! दवर बा, पाँच हजार मजूरी बढ़ाइब, त चीजपर सात हजार दाम राखि देब। हमनी के त सूद बेसी करीं, त कनून से पकड़ल जाईं, बहीखाता में तनिको फेर-बदल होय, तो, जरिवाना-जेहलखाना।

लादूचंद—महाजनों के रहता बा साहुजी, अपने लोग त ६० रुपया देके बही भै हींगलोट पर सौ रुपया चढ़ाई ले। कहैके रही छ रुपया सैकड़ा, आ होई चौबीस रुपया सैकड़ा। अपने के छोट-भैया त रुपया पर पैसा रोजकै सूद असूलें लें। हमनिये दुकन-दारन के मुसुकि बान्हिके पटकि दि आइल बा। अब हई जे कनून बनल हा, जौना में दुकान के नोकरन के अतवारकै छुट्टी औ घंटासिरे काम के बात लिखाइल बा, आसे त आरू हमनीकै हाथ बन्हा गइल।

ढोंढामल—लादूचंद ! तू त अपने बापोसे बढ़के काइयाँ निकरला। आजकाल लड़ाईके दिन में त दुक-दरहनै कै नु पाँचो घीउ में बा। एक रुपया के चीज कै चारि रुपया लेत बाड़न्, सरकार दाम ठीक करै कै अईन-कनून बनावते रहति-आ, बाकी ऊ डार-डार जाति-आ, न तोहन लोगन पात-पात।

लादूचंद—इहै त कमाये के दिन ह, सेठजी ! तुहूँ कपड़ा के मिलवाला लोग, निहाल हा गइला। डेढ़

सौ रुपया के रुई कै गांठ रहे, तब एक रुपया सात आना धोती-जोड़ा, अढ़ाईसो रुपया गांठ भइला पर दु रुपया सात आना, फेनु भाव गिरिके जब गांठि १६० रुपया रहि गइल, त तीनों रुपया से बेसी।

दुब्बर *साहु*—हमनी के एक-दूसरा कै हिरिस कइला से काम ना चली सेठ लादूचंद जी! ई देखत नु बानी कि कुल्ह भुक्खड़ आ कुछु पढुओ मिलिके चाहत बाड़ें, हमनी कै नाँव ना रहे देवैके, औ हिनुतानो में ऊ रूसै लेखां राज कायम करे चाहत बाड़ैं।

ढोंढामल—ई बात सोचै के ह, बेटा लादूचंद!

(अवाज आवति आ) "मजूर-राज, कायम हो", "किसान राज, कायम हो", "पूँजीसाही, नास हो।" "लाल झंडा, अमर हो।"

[नोहर, रमजान केतना लोगके साथे लाल झंडा लेले पहुँचलै, औ मंचके नीचे खड़ा भइलैं, सेठ लोग सहमि के सुनत-आ।]

रमजान—(बाख्यान देवै के सुर में) भाई लोनी! काममें दिन-रात खटत-खटत हमनी के जिउ जात-आ, औ हमनी के बाल-बच्चा अन्न बिना पटपटात बाड़ैं। हेने हेइ देखीं, कोठापर कोठा उठल चलि जात-आ, बिजुली कै पंखा रात-दिन चलत-आ। ई कुलि

केकरा कमाई से ? हमनी मजूरन के कमाई से। चीनी के मिलन में चार बरिस में लागल रुपया कुल्हि मुनाफा से सधि गइल, इ केकरा कमाई से ? हमनीका कमाईसे। अन्न, कपड़ा, लोहा, लक्कड़ दुनिया भरकै कुलि चीजु जाँगर चलौला—चोटीकै पसीना एड़ीले बहौलासे पैदा होला। जे आपन देहि ना सम्हारि सकैला, से का चीजु आ धन उपराजी। कामचोर-चामचोर हमनीकै कुलि कमाई लूटिके मउजि करत बाड़ैं। केहू मिलकै मालिक बनिके लूटत-आ, केहू दुकान छानिके लूटत-आ, केहू हमनियेके जांगरकै कमाई रुपयाके रूपमें चोरायके डेढ़ा-सवाई क रहल बा। "बोलीं कमकरनकै (सब लोग) जै।" "बोलीं कामचोरनकै [सब लोग] छै।"

नोहर—भाई लोनी ! अहिर सोझे बतियावै जानैला। जेतना लोग दूसराके कमाई पर, दूसराके पसीना पर, दूसराके खूनपर जीयैला, ऊ सब जोंक हवै। जबले जोंक दुनियामें रहिहैं. जबले जोंकनकै सरदारी रही, तबले मजूरन, किसानन. जांगरवालनके हाँड़ी पर ढकनी न बइठी। "बोलीं जोंकनकै, (सब लोग) छै।" "बोलीं मजूरनकै [सब लोग] जै"।

[लाल झंडा लेले लोग चलि जात-आ]।

ढोंढामल—देखा हो दुब्बर साहु ! जे किछू बचल रहल ह,

ऊहौ पुरनाहुत हो गइल। हमनीके इ जोंक बनावत बाड़ेंसन् !

दुब्बर *साहु*—ई मतारी बहिनके गारीसे बढ़िके हवे, सेठ भाकुरचंद !

भाकुरचंद—ऐ-इ-इ-इ स-स्-सन ग्-ग्-ग्-गारी ज्-ज्-ज्-जिनि-ग्-ग्-ग्-गियो, भ्-भ्-भर न्-न्-ना स्-स्-सुन-लीं।

[परदा गिरत आ]

अंक ३

[गीत]

हाइ दैवा बनल गरे फाँसी।
स्वारथसे जोड़ि जोड़ि पोथिया बनौलस,
बम्हना भइल सतनासी।
हमनीके खुनवा सुखौला कै किछुना,
जोंकिया सरगकै बासी॥
जेतनी अनैया औ पपवा जगत्में,
भगियै लगौलै झाँसी॥
झूठ तोर सधुआ धरमवा करमवा,
झूठै बम्हनवा कै कासी॥ हेई०॥

[बड़ बड़ जटा ओ देह में भभूत लगौले साधु गोपालगिरि धूनीके पास बैठल बाड़ें, ओनकरा हाथ में गंजही चिलम में कंकड़ भरल हवै]

गोपालगिरि—लेना हो शंकर, गांजा है न कंकर। शंकर आजा, कैलसपतीके राजा [चिलम में दम लगावत-आ] [दूसर जटाधारी साधु रामदास माथे में बैरागी तिलक लगौले आके]

रामदास—सीत्-ता-रा-ा-ा-म्।

गोपालगिरि—आवा सीताराम, आवा दम लगावा।

रामदास—दम हवै! ओ हो! महतिमा आजकाल दमो सपना हो गइल बा। कांगरेजवालनकै नास हो! "रहै न कोउ कुल रोवनि हरा।" दु महिन्ना दम लगौला भइल।

गोपालगिरि—सूखा भुर्रा हा सीताराम! नैपालसे आवे में एक चिलम गांजा निकल गइल, तौना खातिर, मत पूछा, एक महिन्ना कै जेहल दे देहलस्।

रामदास—आखिर ससुरी कांगरेज गइल, बाकी संकर के बूटी साधुनके मुंह से छोड़ाके [चिलम ले के दम लगावत-आ, फेनु चिलम देके उठे चाहत-आ]

गोपालगिरि—कौन जलदी पड़ल बा, सन्त!

रामदास—सौंकेरे कहीं बसती-नगर धरै के चाही, इहाँ जंगल अगोरलासे काम नानु चली?

गोपालगिरि—संत बइठि जायें, त जंगल में मंगल होला, महातमा! अपने कै नांव?

रामदास—हमार एक गो छोटा सा नांव रामदास ह, आ, अपने के ?

गोपालगिरि—एहि चोला कै नाँव गोपालगिरि हा, गुरु महराजकी किरपासे, रामदासजी ! जंगलसे डेरा मत ।

रामदास—पेट में मूस कूदत-आ गोपालगिरिजी; आ दुपहर हो गइल ।

गोपालगिरि—बइठा महातमा ! गुरु महाराज की दयासे इहैं बैठले-बैठल रिद्धि-सिद्धि सब चहुँप जाई ।

रामदास—त मालूम होत-आ, गोपालगिरिजी ! अपने बसती के चेतौलने बानी ?

गोपालगिरि—साधु जहाँ बइठि जायें, वहाँ दुनिया ससुरी चेती न त का करी ?

[गोइके आहट सुनाइल, रामदास देखलें ए गो मेहरारू थरिया में किछु लेइले आवति-आ]

रामदास—[देखिके] मालुम होता, ई भगतिन् किछु ली आवति-आ, पेट में आग लागल बा महातमा ! सबेरे आसन छोड़ला पर एक लोटिया [तीन सेर भरै लायक लोटा देखाके] दूध पियलीं ।

गोपालगिरि—गुरु महाराज भेज देहलें रामदासजी ! अब डंडकमंडल राखा, आज इहईं आसन लगावा ।

[रामदास कमरा और कमंडल राखिके मिरिगछाला बिछा के बइठि गइलें । मेहरारू आ के थरिया गोपालगिरि

के समने रख के दूनों साधुन के गोड़ लगल, औ "खुस रहा भगतिन" असिरवाद पा के एक ओर बइठि गइल। गोपालगिरि थरिया खोलिके हलुआ-पूड़ी रामदास के सामने करतै बोललन्]

गोपालगिरि—ला महात्मा ! अब देर मत करा, माई परेमसे बनाके ले आइल बिया। गुरु महाराजके भोग लगावा !

रामदास—आवा महात्मा ! दूनों मूरती रामजीकी हिच्छा से।

भगतिन—तबले पावल जा, हम घरसे औरू ले आवतानी।

गोपालगिरि—नाहीं माई ! तकलीफ ना करैके, सन्त एतनैसे गुजारा कर लीहें, गुरु महाराजकी किरपासे।

भगतिन—ना महराजजी ! घरमें बहुत राखल बा [भगतिन जल्दीसे निकरि गइलीं]

[रामदास भगतिनके मुँहकी ओर खुब निहारत रहल]

गोपालगिरि—कहा महात्मा ! नारद-मोह त ना हो गइल ?

रामदास—मुनि लोग कै जहाँ ऊ हाल, तहाँ हमा-सुमाकै कवन बात ? बाकी भगतिन बाउर नइखीं।

गोपालगिरि—अबहिन तीस बरिसकै छोकरी हवे, बाउर कहत बाड़ा रामजी !

रामदास—बाउर नइखी कहत। कवन जाति हवे ?

गोपालगिरि—"जात-पाँत पूछे नहिं कोई।" औ फेनु "राँड़

बाभनी सूखा पीपर। इनमें हक्क फकीरोंका है।"
समने थरिया राखिके देखतका बाड़ा ?

रामदास—दूनो मूरतीकै साथे भोग लागी।

गोपालगिरि—ई न कहा, बभनिया मन हर ले गइल बिया।

रामदास—मुँहसे जौने ना तौने बचन ना निकालेके चाहीं, कौनो भगत सुनि लिहले तब ?

गोपालगिरि—साधु लोग देखि सुनिके धुनी रमावै ला सन्त! गुरु महाराज का किरपासे। हमनीकै रोज-रोजकै इहै काम हवे।

रामदास—"दुनिया ठगी मकूकरसे। रोटी खाई घिउ-सक्करसे।"

गोपालगिरि—और ई बसती त अब्बै नु चेतै लागल हा।

रामदास—त कुछु सिद्धाई देखौला हा ?

गोपालगिरि—दु गो मेहरारुनकै साल-साल भरकै लागल भूत छोड़ौनी हाँ। तीन गो मेहरारुनके कोख खोलैकै जंतर देहनी हाँ।

[भगतिन थरिया लेहले चहुँपि गइलीं]

गोपालगिरि—बहुत तकलीफ भइल माईराम!

भगतिन—नाहीं बाबा! एहि देहींसे सन्त-महात्माकै जेतना सेवा हो जाय, उहै नु ठीक हवे।

रामदास—[अपना संगी की ओर मुँह कके मुस्कुरातै] त आवा

महात्मा ! पानी हमरा लोटो में बा [दूनों जने भोजन करै लगलैं।]

भगतिन—आज एकादसीकै पारन रहल ह बाबा ! अपने दु जने सन्त-महातमाके रूखा-सूखा हाजिर क के हिच्छा पूरा भइल।

गोपालगिरि—जिनगीमें जेतना हो सके ओतना पुन्न कमायेके।

भगतिन—हाँ, बाबा ! एहि देंहकै कवन ठेकाना ? आ हम त मनाई ले भगवान् से कि अपना सरनमें ले चलस्।

गोपालगिरि—अबही माईराम ! तोहार चौथा-पन ना आइल ह।

भगतिन—ई दुनियासे ऊ दुनिया निम्मन ह बाबा ! उहाँ भगवान्के भगती-पूजा निम्मन से होई।

गोपालगिरि—इहौ दुनिया भगवानेके बनावल हवे माईराम !

भगतिन—हवे, बाकी इहाँ माया-मोह बेसी हवे बाबा ! जिउमें माया बेसी लपटि जाले। अपने सब साधु-महातमा के असिरवाद होखो कि भगवान्के चरनमें जलदी सरन मिलो।

गोपालगिरि—ऐसन धरम के काम में साधु-संत के असिर-वाद सदा रहैला माई !

[भोजन हो गइल, गोड़ लागिके भगतिन थरिया ले के चल देहलीं]

रामदास—ई त कोरै भगतिन लौकति-आ रामजीकी हिच्छा से।

गोपालगिरि—सब्बे अंगुरी बरोबर नानु हय। आ बीस गो बंसी फेंकल बा, कुल्हमें मछरी नानु फँसैं ?

[एही बखत, उज्जर पाग, मिर्जई, एढ़ी ले धोती पहिर ले कपारमें तिरपुंड लगौले एक जने। पंडित औ ओनकरा साथ कान पर टोपीके नीचे कलम खोंसले मंसीजी अइलें। दूनों जने दूनो साधुनके हाथ जोड़िके डंडवत कइलें]

गोपालगिरि—आईं देवता। आईं देवानजी ! ओह दिनके बाद त फेनु दरसनै ना भइल।

मंसीजी—नयका सालके बहीखाताक काम ह बाबा ! का करीं "गृह कारज नाना जंजाला।"

गोपालगिरि—हाँ ऐसे होला ! आच्छा पंडितजी ! अपनेहूके दरसन ना भइल रहल ह ?

मंसीजी—इहाँके हमरा सरकार—बाबू साहेब—कै गुरु बड़का पंडित हवीं। कासीजीसे बारह बरिस पढ़िके आइल बानी।

गोपालगिरि—कहाँ चललीं हा, पंडितजी !

पंडित—कासीजीसे एगो बहुत भारी महात्मा आइल बाड़ें, भारी विद्वान् स्वामी सुखानंदजी महाराज। हमरा सरकारके बहुत आग्रह बा, कि स्वामीजी कुछ दिन अमहरामें वास करस, आ अपना मुखरबिंदसे उपदेस सुनावस, बाकी स्वामीजी एकन्ता छाड़ि दुसरा जगह ना रह सकीलैं। अपनेके तक़ीफ ना होइ,

त एही कुटियामें स्वामीजीकै आसन रहो, सरकार अपने के एगो औरो पलानी कै घर बनवा दीहैं।

मंसीजी—[दु तोलाकै पुड़िया हाथमें थमावत]—हमरा साहुजी भेजले हाँ, बड़ा मुसकिलसे बाबा !

गोपालगिरि—[उतरल मुँहपर हँसी दउरि गइल]—जगत-गुरु ब्राह्मणकै बात केसे टारल जा सकैलै पंडितजी !

पंडित—आ ब्राह्मण-गुरु संन्यासी

गोपालगिरि—संन्यासी गुरु अविनासी। ले आवा पंडितजी ! ई स्वामियैजीकै नु आसरम हवे।

[लोग चलि गइल]

रामदास—विधिन त भइल रामजीकी हिच्छासे, तोहार बंसी त कुल्हि खाली जइहैं।

गोपालगिरि—[पुड़ियाके खोलिके] हई देखा, केतना महिन्ना बाद संकरकै बूटी, औ दु तोलासे कम ना।

रामदास—(खुस होके) गाँजा ! बाकी संडसिया हमनीके भजन-भावमें विधिन त ना नु करी।

गोपालगिरि—पढ़ला-लिखलासे बेसी फरक ना होला। रामदास ! गुरुमहाराजकी दयासे सुखानंदौ ठीकै उतरी, नाहीं त बच्चूके भगावत केतना देर लगी।

[आगे-आगे गेरुआ बहतर पहिरले एगो मजबूत अंधेड संन्यासी पाछे-पाछे बाबू रंगसिंह जिमीदार, लोटन साहु

महाजन, पंडित चाणूरदत्त, मंसी फुलेनालाल औ लंगटू नोकर बिसतरा-उसतरा लेहले अइलें । गोपालगिरि आ रामदास उठके कहलें]

"स्वामीजी नमो नारायण !"

स्वामी—[मुँह आ आँखसे भरपूर खुसी देखावत हाथ जोरि के]—सन्तलोग इहां विराज रहल बा। अहोभाग्य। शिवोहं, शिवोहं। हमरा रहला से संतलोग के कौनो कष्ट त ना होई।

रंगसिंह—लंगटू ! देखा परातमा लोगके कौनो कष्ट ना होखेके चाही। एक गाड़ी लक्कड़ ले आके गिरा दा। कौनो तरहकै कष्ट ना होवेके चाही, सुन ला।

लंगटू—हाँ सरकार। [लंगटू धूनीसे फरके बिछौना राखके कुटिया में जाये लगले, बीचै में]

स्वामी—भीतर मत ले जा नारायण ! शिवोहं, अबहिन एहीं बहरे आसन बिछा दा।

[लंगटू स्वामी जी कै आसन बिछाके, एगो कमरा फरका बिछा देहलै]

स्वामी—(बइठिके)—बइठीं नारायण, शिवोहं।

रंगसिंह—(कमरा पर बइठिके)—बइठीं पंडितजी, बइठीं लोटन साहु ! कमरा पर।

लोटन साहु—सरकारके बरोबर !

(लंगटू दूसर कमरा ले आके बिछौलस् पंडितजी आ साहुजी ओपर बइठलें, मंसीजी भुइयैं एक ओर चुक्का-मुक्का भइलें ।]

रंगसिंह—सरकार के आराम करैके होई ?

स्वामी—नाहीं, नारायण शिवोहं रात कै एक घंटा विश्राम हमरा खातिर बहुत हा । सतसंग-बात होखो ।

रंगसिंह—सरकार स्वामी जी महाराज ! संसार दुख चिन्ताके घर हा ।

स्वामी—जुगकै प्रताप हा नारायण शिवोहं, कलिजुग पाँच हजार बीति गइल । मरजादा टूट रहल बा । "वरण धरम नहि आश्रमचारी", सब लोग कुपंथ धै लेहले बा ।

रंगसिंह—स्वामीजी के मुखारविंदसे ठीक निकर रहल बा ।

स्वामी—दुनियामें पाप छा रहल बा, नारायण शिवोहं, एहीसे सालै साल महामारी, अकाल-दुरभिच्छ पड़त-आ ।

लोटनसाहु—करम-धरम सब उठल चल जात-आ । गुरु महाराज ! भगवान्के डर उठ गइल बा ।

स्वामी—हाँ, नारायण शिवोहं, चार दिन की जिनगी ई मायारूपी संसारमें लोग भूल रहल बा । फेनु अन्तकाल में खाली पछताला । बाकी करमभोग टर ना सकैला ।

रंगसिंह—महाराज स्वामी जी ! जीव काहे ना समुझेला कि ई दुनिया रैन-बसेरा हा ?

स्वामी—नारायण शिवोहं, मायाकै फेर इहै कहाला। माया के फेरमें पड़िके जीव अपना असली रूपके भुला देले बा। शिवोहं, शिवोहं, शिवोहं, ब्रह्ममें ई जगत तीनों कालमें खाली भरम हा। [ए ही बखत नोहर कलिकतिया मजूर के भेसमें आ के स्वामी के हाथ जोड़िके ठाढ भइलें।]

स्वामी—नारायण शिवोहं भरम, बैठा। (नोहर एक ओर भुइँपर बइठि गइलें।)

लोटनसाहु—भरम!

स्वामी—सपनेकै माया, अन्हारमें देखला पर रसरीमें साँप कै भरम। मेरा तेरा—हमार तोहार—सब भरम साहुजी! पांकमें गिरल जीवके उप्पर-उठावल, कहल जा सकैला बाकी इहौ भरम, ब्रह्म छाड़ि जब दूसर चीज तीनों कालमें नइखै, त केके के उठाई, कहवाँ से उठाई।

नोहर—महराज जी! सांचै ई दुनिया समुच्चा भरम हवे?

[रंगसिंह, लोटन साहु आ पंडितजी कान खड़ा कैके मजूर की ओर गुरेरके देखै लगलैं।]

स्वामी—हाँ, नारायण शिवोहं। तू. आ जेतना लोग हवै, केहू तीनों काल में नइखे, एकै ब्रह्म दूजो नास्ति।

नोहर—केहू दुनिया में सुख करत-आ, निम्मन खात-आ, निम्मन पहिरत-आ दस हजार आदिमी कै परान,

इज्जत ओकरा हाथमें हा। केहू हमरा लेखा रात-दिन काम क के। मूवत-आ, एक साँझ के अन्नौ ना जुरत-आ, ई काहे ?

स्वामी—ब्रह्मरूप में ई कौनो भेद ना, ना केहू निम्मन खात-आ पहिरत-आ, ना केहू भूखा मरत-आ।

नोहर—भूख पेटके आरालेखा चीरै ले, घरमें खरची ना रहला पर लइकन कै छटपटाल देखि के करेजा फाटै लगैला। हमनी के इ भरमना साच बुझाला।

स्वामी—सपना सांच बुझाला, दिसा-भरमवाला का आपन दिसा साँच बुझाले। बाकी एको ब्रह्म दुतीयो नास्ति, ब्रह्म में कहीं किछुवो विकार नइखे, किछुओ दुख-संताप नइखै सब सदा अनंद हा, नारायण शिवोहं।

नोहर—सपना होइत त केतना खुसी कै बात रहल ह, बाकी ई भूख, ई लइकन के छटपटाइल झूठ ना, सोरहो आना साच बुझाला सामी जी महराज !

पंडित—स्वामीजी महाराज ! ई वेदांत न समुझि सकैलैं, एनकरा के हम समुझावतानी। का नांव हवै तोहर भैया !

नोहर—नोहर नाँव पंडित जी !

पंडित—दुनिया में ई दुख-सुख सब पुरुबिला करम से हा। हमार सरकार एतना साधु-महतिमा, देवी-देवता के सेवा-टहल दान-पुन्न करत बाड़ैं, एकर फल

ओनके आगे मिली। हमरा अमहरा कै लखपती महाजन लोटन साहु जै नौका ठकुरबाड़ी बनवलै हाँ, सदाबरत लगौले बाड़ें, एकर फल बांव ना जाई। एहि जिनगी के पुन्नकै फल भोग-सुख अगिला जनममें मिली नोहर ! पछिले जनम कै कइल पुन्न के फल एहि बखत मिलि रहल बा।

नोहर—पुन्न कै फल ! बाकी पंडित जी ! लौटन साहु लइकैयां अपना चाचा क साथे कपारे पर दौरी ध के तेल बेंचत रहलन। ओहि बखत पछिला जनमकै पुन्न सहाइ ना भइल। दौरी-दुकान राखिके एक कै डेढा करै लगलैं, गीरबन के कमाइल धन अपना घरे सहेटे लगलैं। फेनु सवाई सूद पर रुपया लगावे लगलें, तब जमा होये लागल। जेतना धन औ रुपया लौटू साहु के पाले वा, ऊ सब हमनी लेखाँ कमेरन कै पेट काटि के जमा भइल बा।

पंडित—पेट काटिके कहत बाडा !

नोहर—हम बुर्बक अदिमी हवीं पंडितजी ! एसे बुर्बकै लेखा हमार बातो होई, मुदा एके त देखल जात-आ कि अमहरा के बाबू साहेब होंय, चाहे लोटन साहु होंय, केहु का घरे पहिला के पुन्न-परताप से भूँड नइखै फूटल। हजार घरके भूखन मारिके एहि लोग के घरे धन जमा भइल हा। एसे हमरा त बुझात-

आ कि पछिला जनम कै पुन्न-उन्न कहल, एहा पपवाके छपावै खातिर हा ।

[रंगसिंह औ लोटन साहु के त्योरी बदल गइल]

पंडित—त साधु-बराभन, धरम-करम तोहरा खातिर किछु-ओ ना हा ?

नोहर—पहिले हमहूं बूझत रहलीं, कि किछु बा; बाकी अब लौकत-आ, कि खाली धोखा ह । तीन अदिमी मिलिके तीस आदिमी के कमाई खा जात-आ, आ साथै बुरबकौ बनावत-आ । गरिबवा मुंह ना खोलै, एही खातिर कहल जाला कि बाबू साहेब भै साहुजी अपना करम के कमाई खात बाड़ें । आंखि के समने त लूट पाट छाड़ि ई लोग कौनो कमाई नइखे करत ।

[रंगसिंह, लौटू साहु आ पंडित तीनों लाल-पीयर आँख करै लगलें, स्वामी ममिला बिगड़त देखि के बोललन्]

स्वामी—नाहीं नारायण शिवोहं, तू चाम के आंखि से देखत बाड़ा, ग्यान की आंखसे देखला से साच-साच मालुम होला । नारायण शिवोहं, ब्रम्ह छाडि के जब जीव मायामें पटाला, तबै दुनिया के झंझट झगड़ा होला ।

नोहर—स्वामी जी ! अपना परमगियानी चेला लोग के कह ना दी, कि माया के हमनी गरीबन के दे देस्, जोंकि लेखा हमनी के काम-करनिहारन के

खून ना चूसस्। ई बात करैं त हम मानब, नाहीं त हम इहै समुझब कि धरम-वेदानत-देवता सब हमनी की आँखि में धूरि झोंके के हवें, आ कुलि चोरै-चोर मौसियाउत भाई हवें।

रंगसिंह—धत् तोरा बदमास की [उठि कै नोहर कै गरदन पकरै चहलैं, अहिर कै हाथ लगतै ढिमला के मुंहके बले गिरलें। पंडित जी छोड़ावै चहलें, ओनहूँ के पगड़ी कहाँ गइल औ सटपिटाके एक ओर बहाना बनाके गिरि पड़लें। साहु आ मंसी जी बाबू साहेब के नगीचा पहुँचि रहलैं। असल लड़ाई लंगटू, गोपालगिरि आ रामदास से भइल। सबके बेकाबू क के जब गोपालगिरि की छाती पर नोहर बइठि गइल, त स्वामी जिओ डंडा चला देहलें। नोहर ठठा के हँसल]

नोहर—देखलीं नु सामीजी महराज! ई दुनिया माया हा कि सांच। हई जिमदरवा, सहुवा, कुली धनिकवा हमनी कमेरन के देहिमें लागल जोंक हवें, औ सधुआवा, बम्हनवां, मोलवियवा ई कुली जोंकन के दलाल। जा तोहरा के छाड़ देतानी, काहे से तोहरै कारन हमराके हेतना बोले के मोका मिलल।

[परदा गिरि गइल।]

अंक ४

[हवाई-हमला रच्छा-सिपाही के पोसाक में नोहर गोड़से लँगड़ात चलत बाड़ैं, ओनकरा साथे एगो अंगरेज औ दुगो हिनुतानी सिपाही बाड़ैं ! नोहर के खुरसी में बैठाके तीनो अदिमी बइठि गइलें। अंगरेज सिपाही अंगरेजी में बोलत-आ, आ ओके अपना बोली में हिनुतानी सिपाही खेलावनराम करत बाटैं।]

अंगरेज सिपाही—(कुछ कह के) बहुत तरीफ, बहुत तरीफ।

खेलावन—नोहर भाई ! हमार साथी इ अंगरेज सिपाही तोहरा हिम्मत के बहुत तरीफ करत बाड़ें। ओनकरा अफसोस बा कि ऊ हमनी कै बोली ना बोल सकैलें।

नोहर—खेलावन भाई ! तरीफ कै कव न बात हा, तोहरा लोगन जपनिया रछछन के मारि भगावै खातिर चौबीसो घंटा आगिमें गोड़ धइले बाड़ा, हमनी के घरके हिफाकत नू करैके चाही।

अंगरेज—(खेलावन के किछु पुछलै, खेलावन बतियोलें, फेनु ओकरा मुँहेसे निकसल) बहादुर चाबस्।

खेलावन—जिउ जोखिम में डारिके चारों ओर धधाके जरत बंगलाके भित्तर घुसके लइका के निकारि ले आइब, त बहादुरी कै काम बड़ले बा; बाकी एहूसे बड़का काम ई बा, कि तीनै दिन पहिले तोहरा लोगन के हड़ताल कइला खातिर मलिकवा मलिटरी बुलौले,

औ तोहरा केतना साथिन के लाठी से कपार फोर-वौले, केतना के जेहल पठौले।

नोहर—ऊ त मनेजर के लइका रहै खेलावन भाई ! जे खुदे मनेजरो रहित, त ओहू खातिर हम आगि में कुदि जइतीं। हमरा बड संतोख बा, कि लइका निदाग बाँचि गइल।

खेलावन—[अंगरेज सिपाही के किछु कहलें, ऊ हँसल फेनु] नोहर भाई ! सांचे ई अचरज कै बात ह। कैसे लइकवा के तनिको रेपो ना लागल।

नोहर—जइसही जपनिया रछछवन कै उडनखटोला के मंड-रात हम देखलीं, ओइसही पनिया के चहबचवा में एक डुबकी लगौलीं, फेनु देखलीं अततइया बम-गोला गिरावत-आ; घरनमें आग लगि रहल बा, हम एगो चदरा भिजा के करिहाँव में बन्हली, औ चललीं घरन के देखै।

खेलावन—बम गिरतै में ?

नोहर—खेलावन भाई ! हम एहीकै परवाह करीले, कि जेतना दिन जीये अदिमी लेखाँ जीये, मुअला से भय खाइल हमरा देखैमें बड़ बुरबकई हा।

(खेलावन अंगरेज सिपाही के कान में कहलें)

अंगरेज सिपाही - (खुश होके उछल के नोहर कै हाथ अपना हाथ

में ले के) अदिमी, अदिमी, बहादुर, बहादुर (बइठि के खेलावन से किछु कहले)

खेलावन—नोहर भाई ! ई हमार अँगरेज बिरादर पूछत-आ, कि हम त सुनले रहलीं, कि एहि चटकल में कुलि मजूर सुभास आ जपनिया के पच्छ के हवें।

नोहर—जरमनवा जपनिया रछछवा, मिलैं त कच्चै खा जाईं। आ देस-बेंचवनकै नाँव मति ला खेलावन भाई ! हमनी मरि जाइब तबै जपनिया राछछ हमरा बाप-दादन के भुईं में गोड़ राखै पाई।

खेलावन—(अंगरेज से बात कइलन फेनु) ई पूछत बाड़न कि लड़ाई के जितला पर कैसन दुनिया बनावै चाहत बाड़ा ?

नोहर—जौना में जोंक ना रहें, खुनचुसवा ना रहें; जिमदार, मिल-मालिक, सेठ-सहुकार ना रहें। जौना में सब केहू के देहि से काम करैके पड़े; सब केहू के खाये कपड़ा-रहे कै पूरा इतिजाम होखे। समुच्चा देस औ दुनिया के एगो खान्दान बनि जाय। हइ करिया-गोर बड़की बड़की तनखाहवाली जोंक सपना हो जाँय।

खेलावन—(बात क के) पूछत बाड़ें, कि करिया-गोर जोंक के ?

नोहर—बड़का लाट बाइस हजार रुपया महिन्ना पावैलें, घर-दुआर नोकर-चाकर आ दुसरो खरच लगावल

जा, त ऊ एक लाख के महिन्ना परी। हमनी इहाँ के गाँवन में आना रोज, दु रुपया महिन्ना मजूरी पावेवाला करोड़न लोग बा। ई इगारह हजार गुना तनखाह, लूट ना त का हा? ई गरीब के खून चूसल ना त का ह?

खेलावन—(अंगरेज सिपाही मुँह लाल क के किछु कहले) कहत बाड़ें कि हमरा इहाँ सबसे गरीब के मजूरी २०० पौंड २६०० रुपया साल हवे, और बिल्लाइतके महामंत्री चर्चिलके ६००० पौंड—७८००० रुपया साल, भै ६ हजार रुपया महिन्ना मिलेला। सबसे गरीब आ सबसे बड़का नोकर की तनखाह में ३० गुना कै फरक हवे। हमनी एतनो फरक बरदास करैके तैयार नइखीं, पांच गुना छ गुना कै फरक बहुत हा। इगारह हजार गुना तनखाह लिहल त ई सोझै लूटि हा।

नोहर—विलायत में तीस गुना और हिनुतान में इगारह हजार गुना तनखाह सुनियो के देहिंमें आगि लगि जाले खेलावन भाई! बिल्लाइत कै बड़का मंतिरी छ हजार महिन्ना पावें, औ ओनकर एगो ममूली नोकर बड़का लाट २२ हजार रुपया, छोटका लाट दस हजार रुपया महिन्ना पावें। भाई! जब ले एहि जोंकन के बिदा न कइल जाई, तबले न ई लड़ाई

बन्न होई, न मजूरन-किसानके पेट के अन्न आ तन के कपड़ा जुरी ।

(खेलावन अंगरेज सिपाही से बतियौलें, फेनु उ कहले ।)

अंगरेज सिपाही—जोंक नास हो ।

सब—(एक साथे) जोंक नास हों, जोंक नास हों, जोंक नास हों ।

[सब मिलिके गावत-आ]

उठु उठु रे तें भुख-बन्हुआ
उठु रे धरती के अभगवा

बान्याव बजर घहरावत,
जनमत बढ़िया संसरवा ।

पुरुबिज फेनु नाहीं बान्ही
उठरे अब नहिं तें बन्हुआ

नइ नेंव उठत बा जगवा,
ना रहले सब किछु होइबे ।

आ जुटहु संघतिया समुहें,
ई आखिरि बेर लड़इया ॥

(परदा गिरि जात-आ)

प्रकाशक—किताब-महल, जीरो रोड, इलाहाबाद
मुद्रक—जगत प्रेस एलनगंज, इलाहाबाद